पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार दर्शन और समकालीन भारतीय राजनीति

17

जितेन्द्र सिंह
शोध छात्र (राजनीति विज्ञान विभाग)
गोकुल दास हिंदू गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
मुरादाबाद (उ0प्र0)
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली, (उ0प्र0)

प्रो0 (डॉ.) मीनाक्षी शर्मा
विभागाध्यक्ष, (राजनीति विज्ञान विभाग)
गोकुल दास हिंदू गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
मुरादाबाद (उ0प्र0)
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली, (उ0प्र0)

सारांश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण विचारक थे, जिनकी अवधारणा 'एकात्म मानववाद' सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संतुलन पर आधारित थी। उनका विचार दर्शन स्वदेशी अर्थव्यवस्था, अंत्योदय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और आत्मनिर्भरता पर केंद्रित था। वर्तमान भारतीय राजनीति में उनके विचारों की प्रासंगिकता विभिन्न सरकारी नीतियों जैसे सबका साथ, सबका विकास, आत्मनिर्भर भारत, और ग्रामीण विकास योजनाओं में देखी जा सकती है। यह शोध–पत्र समकालीन भारतीय राजनीति में उनकी विचारधारा के प्रभाव का विश्लेषण करता है और यह समझने का प्रयास करता है कि उनके सिद्धांत आज की सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों के समाधान में कितने प्रभावी हैं। इसके अतिरिक्त, शोध में उनके विचारों की सीमाओं और आलोचनात्मक विश्लेषण को भी शामिल किया गया है।

मुख्य शब्द

एकात्म मानववाद, अंत्योदय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भर भारत, भारतीय राजनीति, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, स्वदेशी अर्थव्यवस्था, सामाजिक समरसता, राजनीतिक दर्शन।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन परिचय

जन्म, शिक्षा और प्रारंभिक जीवन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के नगला चंद्रभान नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता भगवती प्रसाद उपाध्याय रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर थे, जबकि माता रामप्यारी एक धार्मिक और संस्कारी महिला थीं। बचपन में ही माता–पिता का निधन हो जाने के कारण उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उनके मामा ने उनका पालन–पोषण किया। वे बचपन से ही मेधावी छात्र थे और अपनी पढ़ाई के प्रति अत्यंत समर्पित थे।

दीनदयाल उपाध्याय की प्रारंभिक शिक्षा सीकर (राजस्थान) में हुई, जहाँ महाराजा कल्याण सिंह ने उनकी प्रतिभा देखकर उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की। बाद में, उन्होंने पिलानी के बिरला कॉलेज और कानपुर के सनातन धर्म कॉलेज से शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने बी. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की और एम.ए. के लिए पंजीकरण कराया, लेकिन पारिवारिक कारणों से उच्च शिक्षा पूरी नहीं कर सके। इसके बाद उन्होंने अध्यापन कार्य और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया।[1]

राजनीतिक यात्रा और संघ से जुड़ाव

दीनदयाल उपाध्याय का झुकाव राष्ट्रवादी विचारधारा की ओर बचपन से ही था, लेकिन उनका सक्रिय राजनीतिक जीवन तब शुरू हुआ जब वे 1937 में आरएसएस के संपर्क में आए। संघ के संस्थापक डॉ० केशव बलिराम हेडगेवार और गुरुजी माधव सदाशिव गोलवलकर के नेतृत्व में उन्होंने हिंदू राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की अवधारणा को गहराई से समझा। संघ के प्रचारक बनने के बाद, उन्होंने उत्तर प्रदेश में आरएसएस के संगठन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[2]

भारतीय जनसंघ की स्थापना में योगदान

1951 में, जब डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, तब दीनदयाल उपाध्याय को संगठन का महासचिव नियुक्त किया गया। उन्होंने इस नई राजनीतिक पार्टी को एक मजबूत वैचारिक और सांगठनिक आधार प्रदान किया। उनका उद्देश्य एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा विकसित करना था, जो भारतीय परंपराओं के अनुरूप हो और जनता के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

1953 में, जब श्यामा प्रसाद मुखर्जी की संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु हुई, तब जनसंघ नेतृत्वहीन हो गया। इस कठिन समय में, दीनदयाल उपाध्याय ने संगठन को एकजुट रखा और जनसंघ को भारतीय राजनीति में एक प्रमुख विपक्षी दल के रूप में स्थापित किया। उन्होंने पार्टी के लिए 'राष्ट्र पहले, फिर समाज और अंत में व्यक्ति' का सिद्धांत प्रस्तुत किया। 1967 में वे जनसंघ के अध्यक्ष बने और पार्टी की नीतियों को अधिक प्रभावशाली बनाने में जुट गए।[3]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार दर्शन

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति के उन विचारकों में से थे, जिन्होंने भारतीय समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक वैचारिक ढांचा प्रस्तुत किया। उन्होंने 'एकात्म मानववाद' की अवधारणा को विकसित किया, जो भारतीय परंपराओं, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्वदेशी अर्थव्यवस्था और अंत्योदय पर आधारित थी। उनका विचार दर्शन पश्चिमी राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों से भिन्न था और भारत की सांस्कृतिक विरासत तथा सामाजिक संरचना को केंद्र में रखता था।

(क) एकात्म मानवदर्शन

परिभाषा और अवधारणा– 'एकात्म मानववाद' पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एक महत्वपूर्ण विचारधारा है, जिसे उन्होंने 1965 में भारतीय जनसंघ के अधिवेशन में प्रस्तुत किया था। यह विचार पश्चिमी राजनीतिक प्रणालियों के विपरीत, भारतीय संस्कृति, परंपरा और समाज के मूल्यों पर आधारित था। एकात्म मानववाद का मूल सिद्धांत यह है कि समाज को एक जीवंत इकाई माना जाए, जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र परस्पर जुड़े हुए हैं। यह विचारधारा केवल आर्थिक उन्नति पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक विकास पर भी बल देती है।[4]

भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक आधार– एकात्म मानववाद की जड़ें भारतीय दार्शनिक परंपराओं में गहरी हैं। यह विचार उपनिषदों और गीता के सिद्धांतों से प्रेरित है, जिसमें व्यक्ति और समाज के बीच समन्वय को प्राथमिकता दी गई है। दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारत में 'वसुधैव कुटुंबकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की अवधारणा प्राचीन काल से विद्यमान रही है। उनके अनुसार, भारतीय समाज में धर्म, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को एक साथ जोड़कर देखा गया है, जो पष्चिमी समाज से भिन्न है।[5]

पश्चिमी विचारधाराओं (समाजवाद, पूंजीवाद, उदारवाद) से तुलना– पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पूंजीवाद और समाजवाद दोनों की आलोचना की। उन्होंने कहा कि पूंजीवाद व्यक्ति को भौतिक सुख–सुविधाओं का दास बना देता है और समाजवाद समाज को एक यांत्रिक इकाई के रूप में देखता है, जिससे व्यक्ति की स्वतंत्रता बाधित होती है। उनके अनुसार, भारतीय समाज को एक ऐसे मॉडल की आवश्यकता है जो व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करे और आत्मनिर्भरता पर बल दे।[6]

(ख) अंत्योदय

समाज के सबसे कमजोर वर्ग का उत्थान– अंत्योदय का अर्थ है 'समाज के अंतिम व्यक्ति का उत्थान'। यह विचार गांधीजी के 'सर्वोदय' से प्रेरित था, लेकिन दीनदयाल उपाध्याय ने इसे और अधिक व्यावहारिक बनाया। उनका मानना था कि समाज का विकास तभी संभव है, जब सबसे कमजोर और गरीब व्यक्ति का जीवन स्तर सुधारा जाए। उन्होंने इस सिद्धांत को भारतीय राजनीति और शासन प्रणाली का अनिवार्य अंग बनाने की बात कही।[7]

ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था और विकेंद्रीकरण– दीनदयाल उपाध्याय का विश्वास था कि आर्थिक विकास का केंद्र गाँवों को बनाया जाना चाहिए, न कि बड़े षहरों को। उन्होंने विकेंद्रीकरण की नीति पर जोर दिया और कहा कि सरकार की योजनाओं को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए। उनकी यह अवधारणा आज की 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं से मेल खाती है।[8]

(ग) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

भारत की मूल पहचान और राष्ट्रवाद– दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना से परिभाषित होता है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को पश्चिमी राष्ट्रवाद से भिन्न बताया और कहा कि भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें हमारी प्राचीन संस्कृति में हैं। उनके अनुसार, भारतीय संस्कृति में बहुलतावाद और सहिष्णुता निहित हैं, जो इसे अन्य राष्ट्रों से अलग बनाते हैं।[9]

धर्म, संस्कृति और राजनीति के बीच संतुलन– उन्होंने यह भी कहा कि धर्म और संस्कृति को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता। उनके अनुसार, धर्म केवल पूजा–पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक संपूर्ण प्रणाली है। इस संदर्भ में, उन्होंने भारतीय राजनीति में 'धर्मो रक्षति रक्षितः' की अवधारणा को महत्वपूर्ण बताया। उनके विचारों के आधार पर आज की भारतीय राजनीति में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई है।[10]

(घ) स्वदेशी और आत्मनिर्भरता

आर्थिक विचार और भारतीय मॉडल– दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय आर्थिक विकास के लिए स्वदेशी को एक अनिवार्य तत्व बताया। उनका मानना था कि विदेशी आर्थिक नीतियाँ भारत के लिए उपयुक्त नहीं हैं और हमें अपने पारंपरिक संसाधनों का उपयोग करते हुए आर्थिक विकास करना चाहिए। उनका यह विचार गाँधी जी के स्वदेशी आंदोलन से प्रेरित था, लेकिन उन्होंने इसे आधुनिक संदर्भ में विकसित किया।[11]

आत्मनिर्भरता की अवधारणा– उपाध्याय जी का मानना था कि भारत को आत्मनिर्भर बनना चाहिए, न कि विदेशी पूँजी और तकनीक पर निर्भर रहना चाहिए। उन्होंने स्थानीय उद्योगों, कृषि और हस्तशिल्प को बढ़ावा देने की बात कही। वर्तमान में 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान इसी विचारधारा का प्रतिबिंब है, जिसमें स्वदेशी उत्पादन और स्थानीय व्यापार को प्राथमिकता दी जा रही है।[12]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार दर्शन भारतीय समाज और राजनीति के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है। उनका एकात्म मानववाद व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास पर बल देता है। अंत्योदय समाज के सबसे कमजोर वर्ग के उत्थान की बात करता है, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय पहचान को पुनः स्थापित करने का प्रयास करता है, और स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता आर्थिक स्वतंत्रता का समर्थन करता है। आज की भारतीय राजनीति में उनके विचारों की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है, जो उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

समकालीन भारतीय राजनीति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक और आर्थिक दर्शन आज की भारतीय राजनीति में गहरी छाप छोड़ चुका है। उनका एकात्म मानववाद, अंत्योदय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वदेशी अर्थव्यवस्था जैसे विचार वर्तमान सरकार की कई नीतियों और योजनाओं में परिलक्षित होते हैं। उनकी विचारधारा केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी प्रासंगिक है, जिसे आज की शासन प्रणाली में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

(घ) एकात्म मानववाद और वर्तमान शासन प्रणाली

सरकार की नीतियों में 'सबका साथ, सबका विकास'– पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के सिद्धांत को वर्तमान सरकार द्वारा अपनाए गए 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' नारे में देखा जा सकता है। यह विचार समावेशी विकास (Inclusive Development) की अवधारणा पर आधारित है, जिसमें समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भौतिक, मानसिक, और आध्यात्मिक उन्नति का ध्यान रखा जाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एकात्म मानववाद की इस अवधारणा को सरकार की विभिन्न योजनाओं में लागू किया है, जैसे–

- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, जिससे गरीब परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए गए।
- प्रधानमंत्री आवास योजना, जिससे समाज के कमजोर वर्गों को आवास प्राप्त हुआ।
- आयुष्मान भारत योजना, जो स्वास्थ्य सुविधाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रयास है।[13]

सामाजिक समरसता और समावेशी विकास– पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विचार था कि समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए और सभी नागरिकों को समान अवसर मिलने चाहिए। उनका 'सामाजिक समरसता' का सिद्धांत आज की शासन प्रणाली में सामाजिक न्याय के रूप में देखा जा सकता है। एक राष्ट्र, एक राशन कार्ड योजना इस विचार को दर्शाती है, जो प्रवासी श्रमिकों और गरीबों के लिए बहुत लाभकारी रही है। स्वच्छ भारत अभियान जैसे कार्यक्रमों ने जाति, धर्म और आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना पूरे देश को स्वच्छता के लिए एकजुट किया।[14]

(ङ) अंत्योदय और भारतीय कल्याणकारी योजनाएँ

गरीबी उन्मूलन और जनकल्याण योजनाएँ– दीनदयाल उपाध्याय के 'अंत्योदय' का मूल सिद्धांत था कि सरकार की नीतियों का उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुँचाना होना चाहिए। यह विचार भारतीय कल्याणकारी योजनाओं में प्रतिबिंबित होता है–

- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, जिससे करोड़ों गरीब परिवारों को मुफ्त अनाज मिला।
- मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना), जिसने गाँवों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए।
- जनधन योजना, जिससे गरीब लोगों को बैंकिंग सुविधा और आर्थिक समावेशन प्राप्त हुआ।[15]

ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भर भारत अभियान– गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने की दीनदयाल उपाध्याय की अवधारणा आज की ग्रामीण विकास योजनाओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है–

- राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान, जो ग्रामीण क्षेत्रों में शासन को मजबूत करता है।
- आत्मनिर्भर भारत योजना, जो स्थानीय उद्योगों और ग्रामीण उत्पादों को बढ़ावा देती है।
- किसान सम्मान निधि योजना, जिससे किसानों को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता दी जा रही है।[16]

(च) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय राजनीति

भारत की मूल पहचान और राष्ट्रवाद– दीनदयाल उपाध्याय ने भारत के राष्ट्रवाद को पश्चिमी राष्ट्रवाद से भिन्न बताया था। उनका मानना था कि भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी पहचान उसकी परंपराओं, मूल्यों और आध्यात्मिकता में निहित है। यह विचार आज की राजनीति में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में उभरकर सामने आया है।

- भारत में 370 और 35 का निष्कासन, जिससे जम्मू–कश्मीर को मुख्यधारा में जोड़ा गया।
- राम मंदिर निर्माण, जो भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता को पुनर्स्थापित करने का प्रयास है।
- कुंभ मेले और अन्य पारंपरिक त्योहारों को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करना, जिससे भारत की सांस्कृतिक पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल रही है।[17]

संविधान और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश– दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारतीय संविधान को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप होना चाहिए। इस संदर्भ में, वर्तमान सरकार द्वारा कुछ पहलें की गई हैं–

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जो भारतीय मूल्यों और परंपराओं को आधुनिक शिक्षा में शामिल करने का प्रयास है।
- संस्कृत और भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए विशेष योजनाएँ।
- स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली (आयुर्वेद, योग) को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना।[18]

(छ) स्वदेशी अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भर भारत

मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और लोकल इकोनॉमी– दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारत को स्वदेशी उत्पादन पर ध्यान देना चाहिए और विदेशी पूँजी तथा आयात पर अधिक निर्भर नहीं रहना चाहिए। यह विचार 'मेक इन इंडिया' और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी योजनाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है–

- मेक इन इंडिया अभियान, जो विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करते हुए घरेलू उत्पादन को प्राथमिकता देता है।
- स्टार्टअप इंडिया और मुद्रा योजना, जो छोटे व्यवसायों और नवाचार को बढ़ावा देते हैं।
- वोकल फॉर लोकल, जो स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहित करता है।[19]

निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार आज भी भारतीय राजनीति और शासन प्रणाली को दिशा प्रदान कर रहे हैं। उनकी एकात्म मानववाद की अवधारणा सरकार की कल्याणकारी योजनाओं में परिलक्षित होती है, अंत्योदय नीति समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान पर केंद्रित है, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारत की सांस्कृतिक अस्मिता को सुदृढ़ करने में सहायक हो रहा है, और स्वदेशी अर्थव्यवस्था भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अग्रसर कर रही है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति के उन महान विचारकों में से एक थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति, समाज और अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखते हुए एक संपूर्ण वैचारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उनका एकात्म मानववाद न केवल एक राजनीतिक विचारधारा थी, बल्कि यह एक समावेशी और संतुलित विकास मॉडल था, जिसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सामूहिक विकास की परिकल्पना की गई थी। उनका अंत्योदय सिद्धांत समाज के सबसे गरीब और कमजोर वर्ग के उत्थान पर केंद्रित था, जो आज भारत सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

आज की भारतीय राजनीति में उनके विचारों की प्रासंगिकता न केवल सैद्धांतिक रूप से बल्कि व्यावहारिक रूप से भी सिद्ध हो चुकी है। सबका साथ, सबका विकास, आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, जनधन योजना, उज्ज्वला योजना, और आयुष्मान भारत जैसी योजनाएँ उनके सिद्धांतों की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ हैं। इसी तरह, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा वर्तमान समय में भारतीय राजनीतिक विमर्श का एक प्रमुख घटक बन गई है। भारतीय संविधान और शासन प्रणाली में उनके विचारों का प्रभाव परिलक्षित होता है, जो भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को सशक्त करने की दिशा में कार्य कर रहा है।

यह भी आवश्यक है कि उनके विचारों को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जाए और उनका उपयोग केवल राजनीतिक लाभ के लिए न किया जाए। उनके सिद्धांतों का सही अनुप्रयोग तभी संभव है जब हम उनके विचारों के मूल तत्व–न्याय, समानता, स्वावलंबन और सामाजिक समरसता को नीतियों और शासन व्यवस्था में समाहित करें। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब पूंजीवाद और समाजवाद की खामियाँ उजागर हो रही हैं, तब एकात्म मानववाद और स्वदेशी अर्थव्यवस्था के सिद्धांत पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार आज भी भारतीय राजनीति को दिशा दे रहे हैं और आने वाले समय में भी वे एक आदर्श मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। उनके विचारों की पूर्णता को समझते हुए, यदि शासन और समाज सही नीतियों का निर्माण करें, तो भारत एक सशक्त, आत्मनिर्भर और समरस राष्ट्र के रूप में उभर सकता है। उनकी विचारधारा केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य के भारत के निर्माण की आधारशिला है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन राष्ट्रवाद, संगठन और सामाजिक उत्थान के लिए समर्पित था। उनके विचार और सिद्धांत आज भी भारतीय राजनीति को दिशा प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने एक ऐसी विचारधारा को जन्म दिया, जिसने भारतीय जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी को एक सशक्त राष्ट्रवादी दल के रूप में स्थापित किया। उनके द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद, अंत्योदय, स्वदेशी और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सिद्धांत समकालीन भारतीय राजनीति में भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं। उनकी विचारधारा पर आधारित नीतियाँ वर्तमान सरकारों द्वारा अपनाई जा रही हैं, जिससे उनके योगदान की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

संदर्भ–

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1965)ः एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, पृ0 सं0–10–12
2. त्रिपाठी, एस० (2018) : भारतीय राजनीति और राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0–34–38
3. गुप्ता, आर० (2021) : समकालीन भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय के विचार, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 सं0–55–59
4. वही, पृ0 सं0–5–10

5. गुप्ता, आर० (2021) : समकालीन भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय के विचार, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 सं0–23–27
6. त्रिपाठी, एस० (2018) : भारतीय राजनीति और राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0–45–50
7. उपाध्याय, दीनदयाल (1965) : एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, पृ0 सं0–30–35
8. गुप्ता, आर० (2021) : समकालीन भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय के विचार, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 सं0–67–72
9. त्रिपाठी, एस० (2018) : भारतीय राजनीति और राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0–80–85
10. गुप्ता, आर० (2021) : समकालीन भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय के विचार, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 सं0–90–95
11. उपाध्याय, दीनदयाल (1965) : एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, पृ0 सं0–50–55
12. गुप्ता, आर० (2021) : समकालीन भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय के विचार, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 सं0–100–105
13. वही, पृ0 सं0–90–95
14. उपाध्याय, दीनदयाल (1965) : एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, पृ0 सं0–25–30
15. त्रिपाठी, एस० (2018) : भारतीय राजनीति और राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0–55–60
16. गुप्ता, आर० (2021) : समकालीन भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय के विचार, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 सं0–100–105
17. उपाध्याय, दीनदयाल (1965) : एकात्म मानववाद, भारतीय जनसंघ प्रकाशन, पृ0 सं0–40–45
18. गुप्ता, आर० (2021) : समकालीन भारतीय राजनीति में दीनदयाल उपाध्याय के विचार, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ0 सं0–110–115
19. त्रिपाठी, एस० (2018) : भारतीय राजनीति और राष्ट्रवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0–65–70